प्रातः क्लास 3-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अभी बच्चे सामने बैठे हैं। जहां2 से आते हैं वहां अपने2 सेन्टर पर जब रहते हैं तो वहां ऐसे नहीं समझेंगे कि हम उंच ते उंच बाबा के सम्मुख बैठे हुये हैं। वही हमारा टीचर भी है, वही हमारी नईया को पार लगाने वाला हैं। जिसको ही गुरु कहते हैं। यहां तुम समझते हो, हम सम्मुख बैठे हैं। हमको इस विषय सागर से निकाल पार क्षीर सागर मे ले जाते हैं। पार ले जाने वाला बाप अभी सामने बैठे हैं। वह एक ही शिव बाबा की आत्मा हैं जिसको ही सुप्रीम उंच ते उंच भगवान कहा जाता है। अभी तुम बच्चे समझते हो उंच ते उंच बाबा के सामने बैठे हैं। वह तुमको पार भी पहुंचाते हैं। उनको स्थ तो जरूर चाहिए ना। नहीं तो श्रीमत कैसे देवे। अभी तुम बच्चों को निश्चय है बाबा हमारा बाबा भी है- टीचर भी है, सदगुरु भी हैं। पार ले जाने वाला है। वह बाबा हमको रास्ता बता रहे हैं। वहां सेन्टर्स पर बैठने और यहां सम्मुख बैठने में रात दिन का फर्क रहता हैं। वहां ऐसे नहीं समझेंगे हम सम्मुख बैठे हैं। यहां महसुसता आती हैं। अभी हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। पुरुषार्थ करने वाले को खुशी भी रहेंगी अभी हम पावन बन अपने घर पार जा रहे हैं। जैसे नाटक में एक्टर्स होते हैं, समझते हैं अभी नाटक पूरा हुआ अब कपड़े बदली कर हम अपने घर जावें। तुमको भी मालूम है अभी 84 का चक्र पूरा हुआ है। अब बाप आये हैं हम आत्माओं को ले जाने। यह भी समझते हैं तुम घर कैसे जा सकते हो। वह बाप भी है, नईया को पार लगाने वाला खेवईया भी है। वह लोग तो भल गाते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। यह नईया किसको कहा जाता हैं। क्या शरीर को ले जावेंगे। अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर हमारी आत्मा को पार ले जाते हैं। अभी आत्मा इस शरीर द्वारा के साथ वेश्यालय मे विषय वैतरणी नदी में पड़ी हैं। हम असल मे रहवासी शान्तिधाम के थे। हमको पार ले जाने वाला अर्थात घर ले जाने वाला बाप मिला है। हमारी राजधानी थी जो माया रावण ने सारी छीन ली हैं। वह राजधानी फिर जरूर पानी है। बेहद का बाप कहते हैं हे बच्चों अभी अपने घर को याद करो। वहां जाकर फिर क्षीर सागर में आना है। यहां है विष का सागर। वहां है क्षीर का सागर। और मूल वतन है शान्ति का सागर। तीनों धाम है। यह तो है दुःखधाम। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। कहने वाला कौन है? किस द्वारा कहते हैं? सारा दिन मीठे2 बच्चे कहते रहते हैं। अभी आत्मा पतित है जिस कारण शरीर भी पतित हैं। आत्मा पावन बन जावेगी तो शरीर भी पावन मिलेगा। आत्मा पतित है तो ६ जेवर(शरीर) भी ऐसा मिलेगा। अभी तुम समझते हो हम पक्के2 सोने के जेवर थे फिर खाद पड़ने2 झूठे बन गये हैं। अभी वह झूठ कैसे निकले। इसके लिये यह याद की यात्रा की भट्ठी है। अग्नि में सोना पक्का होता है ना। बाप बार बार समझाते हैं यह समझानी जो तुमको देता हूं हर कल्प देता आया हूं। हमारा पार्ट है। फिर 5000वर्ष बाद भी ऐसे ही कहूंगा। इस ड्रामा के चक्र को तुम अच्छी रीति जानते हो कि 84 का चक्र कैसे पार्ट बजाया है। अभी सभी पुकारते रहते हैं। क्योंकि नईया डूबी हुई है विषय सागर में। सतयुग में ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि नईया विषय सागर में डूबी हुई है। वहां तो क्षीर सागर में रहते हैं। तो ऐसे नहीं कहेंगे। यहां विषया सागर में सभी की नईया डूबी हुई है। हम हर 5000वर्ष बाद आकर कहता हूं कि बच्चों पवित्र बनो। सतयुग में भी तुम्हारी आत्मा पावन थी। शान्तिधाम में भी आत्मा पावन रहती हैं। वह तो है हमारा घर। कितना मीठा घर है। जहां जाने लिये तुम जन्म-जन्मान्तर रोगुरु आदि करते आये हो, परन्तु आत्मा जा नहीं सकती हैं। उस अपने घर जाने लिये कितना धंधा करते रहते हैं। बाप समझाते हैं अभी सभी को जाना है। फिर बजाने लिये आना है। यह तो बच्चों ने समझा है। बच्चे जब दुःखी होते हैं तो कहते हैं हे भगवान हमें अपने पास बुला लो। हमको यहां दुःख में क्यों छोड़ा है। जानते हैं बाप परमधाम में रहते हैं। तो कहते हैं हे भगवान हमको परमधाम में बुला लो। सतयुग में कब ऐसे नहीं कहेंगे। वहां तो सुख ही सुख है। यहां तो अनेक प्रकार के अथाह दुःख हैं। तब पुकारते हैं हे भगवान। आत्मा को याद रहती है तो कहती है हे भगवान अपने पास बुला लो। परन्तु भगवान को जानते बिल्कुल ही नहीं। अभी तुम बच्चों को बाप —

का भी मालूम पड़ा है। बाप रहते ही हैं परमधाम में। घर को ही याद करते हैं। ऐसे कब नहीं कहेंगे राजधानी में बुला लो। राजधानी के लिये कब कहेंगे ही नहीं। बाप तो राजधानी में रहते भी नहीं। वह रहते ही हैं शान्तिधाम में। सभी मांगते भी शान्ति हैं। परमधाम में भगवान पास तो जरूर शान्ति ही होगी। जिसको मुक्ति कहा जाता है। वह है आत्माओं का रहने का स्थान। जहां से आत्मायें आती हैं। सतयुग को घर नहीं कहेंगे। वह है राजधानी। अभी तुम कहां2 से आये हो। यहां आकर सम्मुख बैठे हो। बाप बच्चे2 कह बात करते हैं। बाप के रूप में बच्चे भी2 ही कहते हैं। टीचर बन सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज अथवा हिस्ट्री जागराफी समझाते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो मूल वतन है हम आत्माओं का घर। सूक्ष्मवतन तो है ही दिव्यदृष्टि की बात। बाकी सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग यहां ही होता है। पार्ट भी तुम यहां बजाते हो। सूक्ष्मवतन का कोई पार्ट नहीं। यह सा0 की बात है। रहने का स्थान है ही यह। सुखधाम सतयुग को कहा जाता है। कल की बात है। दुःखधाम की बात नहीं। कल और आज यह तो अच्छी रीत बुद्धि में होनी चाहिये। कल हम सतयुग में थे। फिर 84 जन्म लेते2 आज नर्क में आ गये हैं। बाप को बुलाते भी नर्क में हैं। सतयुग में तो अथाह सुख है। तो कोईभी बुलाते नहीं। यहां तुम शरीर में हो तब बात करते हो। बाप कहते हैं मैं जानी जाननहार हूं। अर्थात सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानता हूं। परन्तु सुनाऊं कैसे। विचार की बात है ना। इसलिये लिखा भी हुआ है बाप रथ लेते हैं। कहते हैं मेरा जन्म तुम्हारे सदृश्य नहीं है। मैं तो इसमें प्रवेश करता हूं। रथ का भी परिचय देते हैं। यह आत्मा भिन्न2 नाम रूप धारण करती है। अभी आकर तमोप्रधान बनी हैं। इनको ही छोरा कहते हैं। इस समय सभी छोड़े हैं। क्योंकि बाप को नहीं जानते हैं तो सभी छोरे और छोरियां हो गई। आपस में जब लड़ते हैं तो कहते हैं ना छोरेछोरियां लड़ते क्यों हो। तो बाप कहते हैं मुझे सभी भूल गये हैं। आत्मा ही कहती है छोरे और छोरियां। लौकिक बाप भी कहते हैं। बाप भी ऐसे ही कहते हैं। छोरे छोरियां यह तुम्हारा क्यों हुआ है। कोई धनी-धोणी है? तुम्हारे बेहद का बाप जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, जिसको तुम आधा कल्प से पुकारते आये हो उनके लिये कहते हो ठिकाना भितर में है। बाप अभी सम्मुख बैठ समझाते हैं अभी तुम बच्चे समझते हो हम बाबा के पास आये हैं। यह बाबा ही हमको पढ़ाते हैं। हमारी नईया पार करते हैं। क्योंकि यह नईया बहुत ही पुरानी हो गई है। तो कहते हैं इनको पार लगाओ। फिर हमको नई दो। पुरानी नईया खोपनाक होती हैं। कहां रास्ते में अटूट तो एक्सीडेन्ट हो जाये। तो तुम कहते हो हमारी नईया पुरानी हो गई है। अभी हमें नई दो। इनको भी कहते हैं। नईया भी कहते हैं। बाबा हमको तो ऐसी(ल0ना0)वस्त्र चाहिए। आत्मा कहती है। बाप कहते हैं आठे2 बच्चे स्वर्गवासी बनने चाहते हो तो। हर 5000 वर्ष बाद तुम्हारा यह कपड़ा पुराना होता है। फिर देता हूं। यह है आसुरी चोला। आत्मा भी आसुरी है। मनुष्य होंगे तो कपड़े भी गरीबी के पहनेंगे। साहुकार हों तो कपड़े भी साहुकार के पहनेंगे। यह बातें अभी तुम समझते हो। यहां तुमको नशा चढ़ता है हम किसके बैठे हैं। सेन्टर पर बैठते हो तो यहां तुमको यह भासना नहीं आवेगी। यहां सम्मुख होने से कशिश होती है क्योंकि बाप डायरेक्ट बैठ समझाते हैं। वहां कोई समझावे तो बुद्धियोग कहां2 भागता रहेगा। कहते हैं ना गोते धंधे में फंसे रहते हैं। फर्सत ही कहां मिलती है। यहां तो प्रैक्टीकल में बाप कहते हैं मैं तुमको समझा रहा हूं। भी समझो बाबा हमको इस मुख द्वारा समझाते हैं। इस मुख को भी कितनी महिमा है। गऊमुख से अमृत लिये कहां2 जाकर धक्का खाते हैं। कितनी मेहनत से जाते हैं। है सभी झूठ। मनुष्यों में तो समझ नहीं है ना। यह गऊमुख क्या है। कितने बड़े2 समझदार मनुष्य जाते हैं। इसमें फायदा क्या? और ही लाईफ वेस्ट होता है। बाप कहते हैं यह सूर्य उदय होना आदि क्या देखेंगे। फायदा तो इनमें कुछ है नहीं। फायदा होता ही है पढ़ने में। गीता में पढ़ाई है ना। गीता में कोई भी हठयोग आदि की बात ही नहीं। उसमें तो राजयोग है। तुम

भी हो राजाई लेने लिये। तुम जानते हो इस आसुरी दुनिया में तो कितनी लड़ाई-झगड़े आदि हैं। बाबा तो हमको योगबल से पावन बनाये विश्व का मालिक बना देते हैं। देवियों आदि को हथियार दे देवी=हैं दिये हैं। परन्तु वास्तव में इसमें हथियार आदि कोई बात ही नहीं। काली को देखो कितना भयानक बनाया है। यह भी अपने2 मन की भ्रान्तियों से बैठ बनाया है। देवियों कोई 4-8 भुजा वाली थोड़ेही होती हैं। यह भक्ति मार्ग में क्या2 होता है सो बाप बैठ समझाते हैं। यह एक बेहद का नाटक है। इसमें कोई की निन्दा आदि बात ही नहीं। अनादि ड्रामा बना हुआ है। इसमें कुछ भी फर्क पड़ता नहीं है। ज्ञान किसको कहा जाता है भक्ति किसको कहा जाता है यह बाप ही बैठ समझाते हैं। भक्ति मार्ग से फिर भी तुमको पास करना पड़ेगा। ऐसे नहीं कि तुम 84 का चक्र लगाते2 नीचे आवेंगे। यह अनादि बना बनाया बड़ा ही अच्छा नाटक है जो बाप बैठ समझाते हैं। इस ड्रामा के राज़ को भी समझने से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। वन्डर है ना। भक्ति कैसे चलती है ज्ञान कैसे चलता है यह नाटक बना हुआ है। नाटक तो नाटक ही है। उसमें हम पार्ट बजाते हैं। यह भी बाप समझाते हैं। यह खेल अनादि बना हुआ है। इसमें कुछ भी चेंज नहीं हो सकता। वह तो कह देते ब्रह्म में लीन हो गया। ज्योति ज्योत समाया। यह संकल्प की दुनिया है। जिसको जो आता है वह कहते रहते हैं। संकल्प की दुनिया है फिर तो कोई बात ही नहीं। यह तो अनादि बना बनाया खेल है। मनुष्य बायसकोप देखकर आते हैं क्या इसको संकल्प का खेल कहेंगे। बाप बैठ समझाते हैं यह बेहद का नाटक है जो हू बहू रिपीट होगा। बाप ही आकर यह नालेज देते हैं। क्योंकि वही नालेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। चैतन्य है। इनको ही सारी नालेज है। मनुष्यों ने तो लाखों वर्ष आयु दिखा दी है। बाप कहते हैं इतनी आयु थोड़ेही हो सकती है। बायसकोप लाखों वर्ष का हो तो कोई की बुद्धि में भी नहीं बैठे। तुम तो सारा वर्णन करते हो। लाखों वर्ष की बात कैसे वर्णन करेंगे। तो वह सभी हैं भक्ति मार्ग। तुम ने=भी= ही भक्ति मार्ग का पार्ट बजाया। ऐसे2 दुःख भोगते2 अभी अन्त में आ गये हो। सारा झाड़ पुराना जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। अभी वहां जाना है। अपने को हल्का कर दो। इसने भी हल्का कर दिया ना तो सभी बन्धन टूट जायें। नहीं तो बच्चे, धन, कारखाने, ग्राहक, सब= राजे-रजवाड़े याद आते रहेंगे। धंधा ही छोड़ दिया तो फिर याद आवेगा। यहां तो सभी कुछ भूलना है। इनको भूल अपने घर और राजाई को याद करना है। शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है। शान्तिधाम फिर हमको यहां आना पड़े। बाप कहते हैं मुझे याद करो। इनको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह राजयोग है ना। तुम राजऋषि हो। ऋषि पवित्र को कहा जाता है। तुम पवित्र बने हो राजाई के लिये। वह हठयोगी ऋषि हैं, निवृति मार्ग वाले हैं। वह कब शान्तिधाम सुख का रास्ता बता न सकें। बाप ही रास्ता बता सकते हैं। वह तो कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। भगवानुवाच यह झूठ बोलते हैं। बाप ही सत्य बताते हैं। तुम भी समझते हो यह नाटक है। सभी एक्टर्स यहां जरूर होनी चाहिए। फिर बाप सभी को ले जावेंगे। यह ईश्वर की बारात है ना। वहां बाप और बच्चे रहते हैं। मुझे याद ही दुःख में करते हैं। तो वहां फिर मैं क्या करूंगा। तुमको शान्तिधाम सुखधाम में भेजा बाकी क्या चाहिए। तुम सुखधाम में थे तो बाकी सभी आत्मायें शान्तिधाम में थीं। फिर नम्बरवार आते गये। नाटक आकर पूरा हुआ। बाप कहते हैं बच्चे अभी गफलत मत करो। पावन तो जरूर बनना है। अबलाओं पर अत्याचार तो गाये हुये हैं। तब तो द्रौपदी ने पुकारा ना। तुम सभी हो द्रौपदियां वह है दुशासन। एक दो नंगन करते हैं नाम कर के एक का दिया है। पुकारते तो ढेर हैं। दुशासन नंगन करते हैं। तब बाप को याद करते हैं। बाबा हमको यह नंगन करते हैं। हम प्रवस हैं। छोड़ते ही नहीं हैं। बाप कहते हैं यह वही ड्रामा अनुसार पार्ट बज रहा है। तुम्हारे लिये ही ड्रामा अनुसार मैं कल्प2 आता हूं। नई दुनिया में अभी चलना तो है ना। नई दुनिया और पुरानी दुनिया की आयु स्पीड है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। तुम्हारे पार्ट में भी फर्क नहीं हो सकता। बाप समझा बैठ समझाते हैं। कहते हैं मीठे2 बच्चों पावन बनो। पढ़ाते भी बहुत ऊंच हैं= यह ल0ना0 बनने लिये। इस बाबा के आत्मा को भी पढ़ाकर शरीर में यह बनावेंगे।

कहते हैं बाबा आप तो पढ़ा कर कल्प2 हमको यह बनाते हो। एमआबजेक्ट यह है। हम स्वर्ग में तो जरूर जायेंगे बाकी तो जितना पढ़ेंगे पढ़ावेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। यह भी समझते हो सिवाय पवित्रता कैवेरा पार न होगा। परन्तु असुरों के बन्धन में हैं। वह कितना मारते-पिटते दुःख देते हैं। दोस्तों को, भाईयों को ले आकर नंगन करते हैं। दवाई सूंघा कर भी अपनी आशा पूरी कर लेते हैं। छोड़ते नहीं हैं। शराब पीते हैं तो फिर जैसे जीन हो जाते हैं। वह बिचारी रोड़ियां मारती रहती हैं। गुस्से में आकर मार भी डालते हैं। अबलाओं पर अत्याचार गाये हुये हैं। आजकल तो स्त्रीयां भी गुस्से में आकर पति को मार डालती हैं। उनको कहा जाता है दुःखधाम। बाप सभी राज समझते रहते हैं। घर जाने का फिर राजधानी में आने का राज भी समझाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूं। अक्षर तो बिल्कुल ठीक है। गीता में आटे में लून है। भगवानुवाच ठीक है। फिर कृष्ण अक्षर डालने से झूठ हो गई है। भगवानुवाच मैं साधुओं का भी उधार करने आता हूं। क्योंकि वह भी पापात्मा हैं। भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। यह सारी दुनिया ही भ्रष्टाचारी है। रावण के सम्प्रदाय हैं। विष से पैदा होते हैं। सन्यासी भी विष से पैदा होते हैं फिर सन्यास करते हैं। ल0ना0 कब वहां सन्यास करते हैं क्या। यह तो सदैव पुण्यात्मा महात्मा ही हैं। यहां तो सभी विकार से पैदा होते हैं। तो महात्मा किसको कहें। तुम कहेंगे सभी महात्मा (देवी देवता) तो हम बन रहे हैं। सन्यासी हैं निवृति मार्ग वाले। उन्हों का धर्म ही बिल्कुल अलग है। वह तो आते ही हैं बाद में। वह राजयोग कैसे सिखावेंगे। जिन्हों ने राज्य कब पाया ही नहीं। बाकी अपने को बचाने की कोशिश करनी है। अत्याचार तो होंगे। हिम्मत चाहिए। भूख तो कब कोई मर न सके। शिव बाबा का वर और भूख मरे यह कब हो नहीं सकता। जैसे गरीबों की परवरिश होती है वैसे ही साहुकारों की होती है। कोई भी भूखा मर नसके। सेन्डर कर दिया, सभी कुछ शिव बाबा को दे दिया उससे वरसा लेने लिये। दे दिया, तो वरसा भी याद पड़ेगा। नहीं तो जो वस्तु रखी होगी वह याद पड़ती रहेगी। बाप आत्माओं से बात करते हैं। यह शरीर तो दुम्ब है। मनुष्यों का शरीर से कितना प्यार होता है। तुम्हारा प्यार है आत्मा से न कि शरीर से। वह शरीर को ही याद करते रहते। तुमको अभी शिक्षा मिलती है शिव बाबा को याद करना है। शरीर तो सभी के छूटने हैं। बाकी थोड़ा समय है। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। कैसे 5000 वर्ष में यह चक्र फिरता है। अभी झाड़ पुराना हो गया अपने को देवता कोई कह न सके। है बरोबर आदि सनातन देवता धर्म के परन्तु पतित होने कारण अपने को देवता कह न सके। तुम पूछते हो हिन्दुधर्म कहां से आया। इन ल0ना0 का देवता धर्म किसने स्थापन किया यह किसको भी पता नहीं है। कोई भी बता न सके कि इन्हों का यह धर्म किसने स्थापन किया। कोई जानते नहीं। अभी तुमको बाप बैठ समझाते हैं। इन्होंने कैसे राज्य पाया। आगे जन्म में बाप द्वारा ही राजयोग सीखे हैं। संगम युग भी था। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। तुमको बड़ी खुशी होती है। शिव बाबा हमको सम्मुख सभी बातें समझाते हैं। फिर कल्प2 ऐसे ही चक्र फिरता रहेगा। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ कैसे वृद्धि को पाता है। सारा तुम्हारी बुद्धि में है। सन्यासी कब सुना न सके। वह है हठयोग सिखलाने वाले। तुम राजऋषि हो। उनका है हठयोग यह राजयोग और कोई सिखला न सके। अभी तुम जानते हो बरोबर सतयुग में इन देवताओं को यह राजाई शिव बाबा ने दी। आगे तो तुमको यह स्वप्न में भी याद नहीं था। कब सुना भी नहीं। अभी समझते हो यह तो हम थे। हमने 84 का चक्र खाया। अभी फिर हम यह बनते हैं। हम सो ब्राह्मण, फिर हम सो देवता, हम सो क्षत्री बनेंगे। वह तो कह देते हैं हम आत्मा सो परमात्मा। अभी तुम समझते हो हम सो ब्राह्मण चोटी हैं। फिर हम सो देवता बनेंगे। हम सो क्षत्री वैश्य शुद्र बनेंगे। यह बाजोली खेलते हैं। सारा 84 के चक्र का ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। तुम बच्चों को कशिश होती है सम्मुख जाकर सुनें। गर्म2 फुलका खाते। वहां तो झाड़ी हो जाती बाबा पास जाकर ताजा2 फुलका खावें। जिनको गर्म फुलके का मजा बैठ जाता है वह तो घड़ी2 भागते हैं। फुलके में बड़ा ही मजा है। सच पूछो तो घी को तो बहुत मजा आता है गर्म2 फुलका खाने में। मुझे अच्छा2 मीठे2 खाता हूं ना। तो मेरे को बहुत मजा आता है। दिन होती है सारा दिन खाता रहूं। बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग अर नमस्ते।